2022.

ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

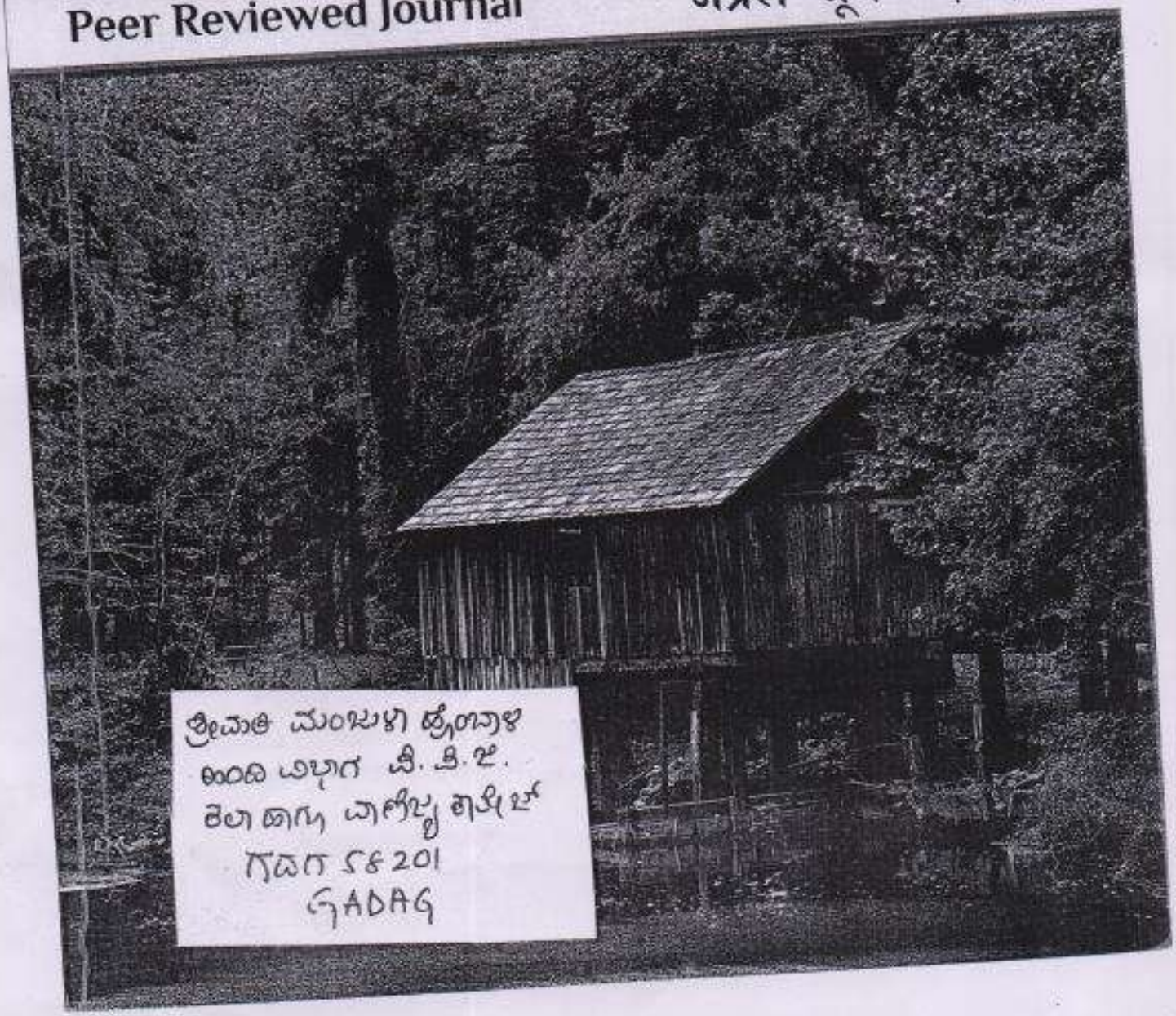

Peer Reviewed Journal

अप्रैल-जून - २०२२

साहित्य और संस्कृति

ISSN : 2320-0391

सृजन

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक

वर्ष - 10 | अप्रैल-जून - 2022 | अंक - 30

Peer Reviewed Journal

परामर्श मंडल

1) प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
कुलपति, आंध्रप्रदेश केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, विजियानगरम
2) प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा एवं संशोधन केन्द्र दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
3) प्रो. एस. के. पवार
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड
4) प्रो. प्रतिभा मुदलियार
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
5) प्रो. नामदेव गौडा
हिन्दी विभाग, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर
6) ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಜಗಜಂಪಿ
ನಿವೃತ್ತ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ಕೆ.ಎಲ್.ಇ. ಲಿಂಗರಾಜ ಕಾಲೇಜ್, ಬೆಳಗಾವಿ
7) ಡಾ. ವಿ. ಎಸ್. ಮಾಳಿ
ನಿರ್ದೇಶಕರು, ಶ್ರೀ ಬಿ. ಆರ್. ದರೂರ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರ ಹಾರುಗೇರಿ, ಜಿ. ಬೆಳಗಾವಿ
8) ಡಾ. ಮೈತ್ರೇಯಿಣಿ ಗದಿಗೆಪ್ಪಗೌಡರ
ಸಹಾಯಕ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಕನ್ನಡವಿಭಾಗ, ರಾಣಿಚೆನ್ನಮ್ಮ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬೆಳಗಾವಿ

प्रधान संपादक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी, विजयपुर

सह संपादक

डॉ. एस. जे. जहागीरदार

हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल हिंदी

डॉ. एस. जे. पवार

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, बंगारम्मा सज्जन महिला महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल

अवकाशप्राप्त प्राचार्य, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड

डॉ. आर. वी. पाटील

जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धारवाड

डॉ. एम. एस. मागणगेरी

कन्नड विभाग श्री संगमेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चडचण जि. विजयपुर

Peer Reviewed Journal

ISSN : 2320-0391

ವರ್ಷ-೧೦ ಅಂಕ-೩೦

ಸೃಜನ

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಎಸ್. ಟಿ. ಮೇರವಾಡೆ

ನಿವೃತ್ತ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ಬಿ.ಎಲ್.ಡಿ.ಇ. ಸಂಸ್ಥೆಯ ಬಸವೇಶ್ವರ ಕಲಾ ಮತ್ತು ವಾಣಿಜ್ಯ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬಸವನಬಾಗೇವಾಡಿ

ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಆರ್. ವಿ. ಪಾಟೀಲ

ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ, ಜೆ.ಎಸ್.ಎಸ್. ಕಾಲೇಜ್ ಧಾರವಾಡ

ಡಾ. ಎಮ್. ಎಸ್. ಮಾಗಣಗೇರಿ

ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ, ಶ್ರೀ ಸಂಗಮೇಶ್ವರ ಕಲಾ ಮತ್ತು ವಾಣಿಜ್ಯ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಚಡಚಣ ಜಿ. ವಿಜಯಪುರ

ಏಪ್ರೀಲ್-ಜೂನ ೨೦೨೨

ವಿಳಾಸ

ಸೌಮ್ಯಪ್ರಕಾಶನ

'ಕಬೀರ ಕುಂಜ'

ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ ದರ್ಗಾರೋಡ, ವಿಜಯಪುರ-೫೮೬ ೧೦೩

ಮೊ. ೯೪೪೮೧೮೫೭೦೫, ೯೯೦೨೪೯೫೭೯೫

Email : stmerwade1961@gmail.com

मुद्रक : **त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स** कागदगेरि गल्ली गदग - 582 101

Email : chaitanyaoffset@gmail.com Mob : 9448223602, 9481523602, 8884495331

ಇಲ್ಲಿಯ ಲೇಖನಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳು, ಲೇಖಕರವೇ ಹೊರತು ಪತ್ರಿಕೆಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳಲ್ಲ-ಸಂಪಾದಕರು

मुझे माफ कर देना... मैं कर्जदार हूँ तेरी । मैं तुझे अपने घर नहीं ले जा सकती । अगर... मैं तुझे ले जाऊँगी तो तेरा बाप हम दोनों के साथ तेरी तीनों बडी बहनों का जीवन भी नरक बन जायेगा । इसीलिए मैं तुझे पाँच जनों की रक्षा के बदले अपने साथ बेटा ले जा रही हूँ ।" शीला फूट-फूट कर रोती हुई बच्ची को मोटी औरत के पास देकर वहाँ से निकल गयी थी ।

शीला जैसे ही ऑटो से उतरी उसकी बेटियाँ दौडती हुई आकर उससे लिपट गयीं । बडी बेटी लक्ष्मी ने माँ का उदास चेहरा देखकर पूछा था "माँ बेटा लाई हो न...?" शीला की आँखें भर आयी थीं । उसने दबी आवाज में कहा था "हाँ मेरी बेटी, मैं तुम सब के लिए बेटा ही लाई हूँ । बेटे के लिए मैंने बहुत बडी कीमत चुकायी है ।"

भाई को पाकर तीनों लडकियाँ फूली नहीं समा रही थीं । शंकर जब घर लौटा तो मुँह लटकाये बैठी शीला को और उसके पास लेटे बच्चे को उचटती नजरों से देख गरजती आवाज में पूछा "क्या हुआ है?" टूटी आवाज में शीला ने कहा- "बेटा ।" 'बेटा' सुनते ही शंकर खुशी से उछल पडा । बोला "अरी मनहूस । बेटा हुआ है तो फिर मुँह लटकाये क्यों बैठी है? क्या तकलीफ है तुझे...?" वह झट से बच्चे को गोद में लेकर उसका मुँह चूमने लगा । बच्चा जोर जोर से रोने लगा था । बहुत दिनों बाद उसे अपनी तीनों बेटियों पर भी प्यार उमड आया था । वह बेटियों को अपने पास बुलाकर उन्हें बच्चे के छोटे-छोटे हाथ-पैर दिखाने लगा था । बाहर जोरों की बारिश हो रही थी और भीतर जोरों से बच्चा रो रहा था ।

शंकर ने शीला की गोद में बच्चे को डालते हुए कहा था "ले तू इसे सँभाल, मैं अभी बाजार जा कर बच्चों के लिए मिठाइयाँ, फल और इस नन्हें के लिए कुछ गरम कपडे लाता हूँ.... और हाँ, तेरे लिए भी कुछ दवाइयाँ वगैरह लाना है तो बता दे, मैं सब कुछ लेता आता हूँ ।"

शीला ने कुछ नहीं कहा था । शंकर तेज बारिश में छाता लेकर बाजार के लिए निकल पडा था ।

■■

ताजा नगर, हुबली (कर्नाटक)

Hindi Sahityake Kavi Ramadhari Sinha Dinkar Makanalal Chaturvedi Methali Sharan Gupta Ke Kavya me Rastriya Cheta

हिंदी साहित्य के कवि रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

• श्रीमती मंजुला होंबाळी

कोई विदेशी जो भारत से बिलकुल अपरिचत हो एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करें तो उनको इस देश में इतनी विभिन्नताए देखने में आएंगी की वह कह उठेगा की यह एक देश नहीं बल्कि कई देशो का एक समूह है । जो आसानी से आंखों के सामने आती है बिल्कुल भिन्न है ।

भारत में कोई ऐसा अन्न नहीं जो यहाँ उत्पन्न न किया जाता हो । कोई ऐसा फल नहीं जो यहाँ पैदा न किया जा सके । कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं जो यहाँ के भूगर्भ में न पाया जा हो और कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर नहीं जो यहाँ के फैले हुए जंगलों में न मिले यदि इस सिध्दांत को देखना हो कि आबो हवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, और शरीर और मस्तिष्क पर कैसा पड़ता है, तो उसका जीता जगता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न राज्यों के लोग हैं । इसी तरह कई मुख्य भाषाएं भी प्रचलित हैं और बोलियों की तो कोई गिनती ही नहीं क्योंकि यहाँ एक कहावत मशहूर है :

''कोस कोस पर बदले पानी बीस कोस पर बदले बानी''

भारत में अनेक धर्मावलंबी और रूप रंग वाले विभिन्न खानपान वाले लोग भारत में निवास करते अनेकता में एकता की भावना को दर्शाते हैं । अनेक संस्कृति को अनुकरण करने वाले लोगों से भरा हुआ देश अनेकता में एकता दर्शाया है ।

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

हिंदी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्र कवि के रूप में है । उनकी कविता अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरूक है ।

जनता के हर्ष विषाद की वाणी का स्वर मुखरित होता है । दिनकर की राष्ट्रीयता वास्तव में भाववादी राष्ट्रीयता है । उसमे चिंतन की संगीत की अपेक्षा आवेग और आवेश ही प्रधान है । पराधीन वातावरण में अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप दिनकर में दिखाई देता है । जिसमें उत्साह है उमंग है प्रेरणा है और आस्था है उनका यह स्वर निश्चय ही एक तो भारत के स्वाधीनता संग्राम के दौरान और दूसरे चीन आक्रमण के समय अपने ढंग से उभरता है ।

'दिनकर' ने अपने काव्य में 'युद्ध' को भी उचित स्थान दिया। कदाचित वे पहले कवि हैं जिन्होंने उसके मूल कारणों के पक्ष विपक्ष पर विचार करते हुए उसकी समस्याओंद्ध का विश्लेषण करके उसका समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। 'रेणुका' 'हुंकार' और सामधेनी में जहाँ उनके हृदय के अंगार समय के झोंकों से प्रज्वलित होकर भयानक लपटों के रूप में व्यक्त हुए। 'कलिंग विजय' और 'कुरुक्षेत्र' में उनका मस्तिष्क मानव जीवन के युग युग से चले आते उस अभिशाप के चमन का मार्ग खोजने को अग्रसर हुआ। जिससे छुटकारा प्राप्त करने का आकांक्षी होते हुए भी मनुष्य उसी में बुनकर रह जाता है। युद्ध मानव सभ्यता का एक अभिन्न अंग बन कर रह गया। इनकी कविता तरूण हृदयों के गुप्त तारों को झंकृत कर देने की विलक्षण शक्ति है आरंभ से ही गुप्त जी संवेदनशील रहे कि भारत की दलित अवस्था को देखकर नयनों में आंसू उमड आए प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की भव्यता का इन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वर्तमान की पृष्ठभूमि में भी भूतकाल को ही साकार कर दिया।

राष्ट्रीय भावना से युक्त व्यक्ति अपने अतीत गौरव के प्रति मोहित होकर उससे वर्तमान के लिए निर्माण के लिए प्रेरणा ग्रहण करता है। दिनकर ने अनेक कविताओं में ऐतिहासिक पौराणिक महापुहषों से प्रेरणा ग्रहण कर उनका उपयोग किया है। प्राचीन घटनाओं में नए आर्य की व्यंजना करके कभी अपने युग के लिए प्रेरणा प्राप्त करता है। इसे प्रभावित करना चाहता है।

'दिनकर' युग ही नहीं सृष्टा भी है। अत: उनमें क्रांति की भावना भी आवश्यक है स्वाभाविक है। वह स्वराज के बाद 'समर शेष है' की रचना करता है आवश्कता पढ़ने पर परशुराम को आहवान करता है। जब तक क्रांति ना होगी तब तक सामाजिक विषमता अत्याचार शोषण लाचारी उत्पीडन समाप्त नहीं होगा उनकी अनेक कवितएं ओजपूर्ण वाणी शौर्य एवं उष्मा से अनुप्राणित है।

'दिनकर' प्रगति चेतना और प्रगतिशील भावना के कवि हैं। उनमें शोषित के प्रति सहानुभूति और शोषक के प्रति क्षोभ है। वे वर्गगत एवं सामाजिक विषमता को दूर करना चाहते हैं।

उनकी आवाज में ओज, लेखनी में तेज को देखते हैं। दिनकर के काव्य क्षेत्र में उर्वशी पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। दिनकर के 'हिमालय के प्रति' कविता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की खुली अभिव्यक्ति हुई है।

"पुण्य भूमि पर कराल संकट आ पड़ा है
और व्याकुल सुत तड़प रहे हैं।"

आहवान है 'कुरुक्षेत्र' में हम देख सकते हैं' युध्द एवं शांति का संदर्भ का प्रसंग है। लेकिन युध्द से बचने के लिए अवकाश नहीं है युध्द एक तूफान है जो भीषण विनाश करता है। पर जब तक समाज में शोषण, दमन, अन्याय मौजूद है तब तक संघर्ष अनिवार्य है।

वह भारत का अस्तित्व वहाँ नहीं देखना जहाँ भय -संशय का राज्य है और लोग मैत्री के आदर्श को भूल कर झंडो तथा नारों के नीचे बैठे हुए हैं। बल्कि असली भारत को तो वह वहाँ पाता है जहाँ शांति, बंधुता और न्याय के स्वर मुखरित हैं। जब व्यक्ति अपने श्रम, कर्म - कौशल्य से अपना भविष्य को बदल सकता है। अपने नसीब को बदल सकता है इसी के कारण आज भी "दिनकर" जी का काव्य अमर और प्रासंगिक है।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी को भी एक राष्ट्रकवि, राष्ट्रप्रेमी कह सकते हैं ! माखनलाल जी के कृतित्व में राष्ट्रीय चेतना के स्वर गूंजता है !

''जाओ, जाओ, जाओ प्रभु को पहुँचाओ स्वदेश संदेश !
गोली से मारे जाते हैं ''भारतवासी हे सर्वेश !!''

यह पंक्तियाँ १९२० में जालियांवाला हत्याकांड के संदर्भ में शहीदों को याद करते हुए लिखते हैं ! माखनलाल जी एक कर्मठ राष्ट्रसेवी थे इनकी काव्य साधना राजनीतिक हलचल के मध्य विकसित हुई थी साहित्य और राष्ट्र की सेवा दोनों अलग वस्तुएं नहीं रही अंग्रेजी शासन के युग में १२ बार चतुर्वेदी जी को कठोर कारावास का दंड मिला ! इनकी अधिकांश कविताएँ जेल में ही रची गई थी ! द्विवेदी युग में ही प्रकाश में आ गए थे इनकी शैली अन्यों से भिन्न है, अपनी शैली में वे सर्वथा मालिक थे राष्ट्र की वेदना का जैसा सजीव चित्र अपनी कविताओं में उपस्थित किया है ।

देश प्रेम से ओतप्रोत उनकी कविता ''पुष्प की अभिलाषा'' को कोई नहीं भूल सकता-

''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंद प्यारी को ललचाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक''

यहाँ एक फूल के माध्यम से अपना देश प्रेम को प्रंकट किया है !

माखनलाल चतुर्वेदी ने हमेशा अपने देश को महान ही समझा है ! हिंदी साहित्य में एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रख्यात हैं । इनकि कविताओं में हमें यह देखने को मिलते हैं जैसे अनुभूति, भावना, आदर्श, त्याग, राष्ट्रप्रेम, समाज कल्याण, आदि इनमें अपने पत्रकारिता से विदेशी शासन के ख़िलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया और सामान्य लोगों के मन में देश प्रेम का भावना जगा कर देश के लिए बलिदान देने के लिए आहवान किया ।

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी भाषा में एक ऐसा कवि है जो राष्ट्रीयता का जोश उनमें भरा पड़ा है !

राष्ट्रीय काव्य से हमारा तात्पर्य उस काव्य से है, जिससे किसी राष्ट्र की महिमा का गुणगान किया जाता है उसके अतीत गौरव के चित्र अंकित किया जाता है, जिससे समूचे राष्ट्र को अपनी स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता के लिए आत्म उत्सर्ग करने के प्रेरित किया जाता है जिसमें राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ संपूर्ण राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को स्थिर रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिसमें अपनी मातृभूमि मातृभाषा के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास प्रकट किया जाता है जिसमें अपनी गौरवपूर्ण संस्कृति के प्रति तीव्रअनुराग व्यक्त किया जाता है जिसमें राष्ट्र विरोधी रुढियो एवं परंपराओंद्ध के प्रति जन-जन के हृदय में विद्रोह उत्पन्न करने की क्षमता होती है, जिसमें राष्ट्र विरोधी शक्तियों एवं शत्रुओं के प्रति तीव्र घृणा जागृत करने की शक्ति होती है और जो राष्ट्र के सामूहिक उन्नति, सामूहिक प्रगित एवं सामूहिक समृद्धि के हेतु सर्वसाधारण के हृदय में तीव्र ज्वाला प्रज्वलित करने में समर्थ होता है जैसे काव्य में संपूर्ण राष्ट्र के अंतर्गत उत्कट क्रांति एवं तीव्र आंदोलन उत्पन्न करने की सामर्थ होती है और ऐसे काव्य प्राय उसी समय लिखे जाते हैं, जबकि कोई विदेशी आक्रमणकारी किसी राष्ट्र को अपने पाशविक शक्ति का शिकार बनकर उसे परतंत्र बनाने का प्रयत करता है अथवा परतंत्र बनाकर

उस राष्ट्र के जन-जन को अपने क्रूर एवं उद्दंड शासन चक्र से कुचलना चाहता है या कोई शासक दमन चक्र के द्वारा बेचारी भोली-भाली जनता को दबाकर अन्याय एवं अधर्म के सहारे लूटता खसोटता हुआ अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करता है उच्च शिक्षण जन-जन के हृदय में क्रांति की लहर दौड़ने लगती है और कविजन अपने रचनाओं के द्वारा उस क्रांति को और भी तीव्र रूप प्रदान किया माखनलाल चतुर्वेदी रामधारी सिंह दिनकर आदि ने राष्ट्रप्रेम को लोगों तक लाने का प्रयास किया है। गुप्तजी पर रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जी का प्रभाव पड़ा।

गुप्तजी ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से अतीत के गौरव का गान करते हुए देश की वर्तमान दशा पर क्षोभ प्रकट किया है। उन्होंने "भारत भारती" में भारतवर्ष की श्रेष्ठता की घोषणा करते हुए कहा -

"भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहा ?

फैल मनोहर गिरी हिमालय और गंगा जल जहाँ संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?

उसका कि जो ऋषि भूमि है वह कौन ? भारतवर्ष है"

खड़ी बोली की कविता में सबसे पहले सफल प्रयोग गुप्तजी ने ही किया था उनके काव्य में खड़ी बोली का मधुर एवं सरल रूप प्राप्त होता है स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी कविता ने राष्ट्रीयता के प्रसार प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था इसीलिए वे राष्ट्रकवि बने गुप्त जी अपने काव्य के माध्यम से लोगों के मन में देश के बारे में सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया हर एक व्यक्ति स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए तैयार हो गए गुप्तजी काव्य को ही नहीं लिखा बल्कि स्वतंत्र संग्राम में भी भाग लिया और इसी के कारण जेल भी गए इनका राष्ट्रप्रेम उच्च कोटि का था।

इनके काव्य में हमें सिर्फ राष्ट्रीय चेतना का ही स्वरूप सुनाई देता है ! उन्होंने देश को एकरूपता से देखा है ! हर एक हिंदुस्तान में रहने वाला हिंदुओंह्न को भारत माता के चरणों के सर्वस्व समर्पित करने वाला व्यक्ति समझते थे ! और लिखते हैं -

हम हैं हिंदू की संतान

जिए हमारा हिंदुस्तान

अंग्रेजों से घोर विरोध करते थे। "अनघ में भी देश प्रेम को देख सकते हैं।

'भारत भारती' में विदेशियों से मुक्ति की आस्था दिखाई देती है। सभी हिंदी भाषी प्रदेश के लोगों को प्रेरणा देने में भारत भारती प्रशंसनीय कार्य किया है इनके प्राय सभी रचनाएं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं।

मैथिलीशरण गुप्त के ऊपर और भी अधिक राष्ट्रीय काव्य के निर्माण का गुरु गंभीर दायित्व था और राष्ट्र कवि ने भी जीवन पर्यंत उत्तरदायित्व को निभाने का संकल्प करके अपनी लेखनी से राष्ट्रीय काव्यधारा का अविरल स्रोत प्रवाहित किया।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के अनेक कविताओं में राष्ट्रीय चेतना को हम देख सकते हैं। जो अज्ञान रूपी अंधकार में सोए हुए इंसान के हृदय को स्पर्श करने का और उनके मन में देशभक्ति को उजागर करने का बखूबी प्रयास किया है।

हिन्दी विभाग : पी.पी.जी. कला एवं वाणिज्य महाविद्यलय, गदग (कर्नाटक)

लघुकथा विधा में नवीन प्रशंसनीय प्रयोग

• यशपाल निर्मल

'एकांतवास में जिंदगी' की लघुकथाओं ने वर्ष २०२०-२१ के लॉकडाउन के दिनों और कोविड-१९ की भयावहता को जीवंत कर दिया है। मैं अचंभित हूँ कि श्री अशोक लव ने लघुकथा के लघुआकार में इतने व्यापक परिदृश्य को कैसे समेट लिया है ? यह लेखक की अद्भुत लेखन-क्षमता का उदाहरण है।

लघुकथा को कथाकार की परिपक्वता का परिचायक माना जाता है। कम से कम शब्दों में कथा की प्रस्तुति करना कठिन होता है। संहित्य की प्रत्येक विधा का शास्त्रीय पक्ष होता है, व्याकरण होता है। उस विधा में पारंगतता के कारण ही श्रेष्ठ सृजन संभव हो पाता है। इन लघुकथाओं से पूर्व भी श्री अशोक लव की लघुकथाओं को उनके बहुचर्चित संग्रह 'सलाम दिल्ली' में पढा है। अब इन लघुकथाओं को पढने के पश्चात् नि:संकोच कहा जा सकता है कि श्री अशोक लव लघुकथा के परिवक्व, सशक्त और मंजे हुए शिल्पकार हैं। कोविड-१९ के एक ही विषय, एक ही सामाजिक स्थिति और वेदना की एक ही लहर पर साठ लघुकथाएँ लिखना लेखक की सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि और अभिव्यक्ति शैली का चमत्कार है।

संग्रह की प्रत्येक लघुकथा का कथ्य भिन्न है, भाषा-शैली भिन्न है। प्रत्येक लघुकथा में इस विधा के शस्त्रीय-पक्ष का निर्वाह किया गया है। ये लघुकथाएँ सहजता से तीव्रता की ओर अग्रसर होती हैं और चरम पर अपने अभीष्ट को स्पष्ट कर देती हैं। प्रत्येक लघुकथा का एक-एक शब्द सोच-समझकर लिखा गया है। यही कारण है कि प्रत्येक लघुकथा में शब्द-संतुलन है, वाक्य सामंजस्य है, कसाव है। श्री अशोक लव की लघुकथाओं की व्यंजना शैली सहृदय पाठक के हृदय को चीरती चली जाती है और संवेदना हृदय को भिगोती चली जाती है। आँखें नम करती जाती है। संग्रह की अनेक लघुकथाएँ व्यवस्था और विसंगतियों पर तीव्र कटाक्ष करती हैं। व्यंजना प्रधान इन लघुकथाओं की मारक शक्ति अदद्धतीय है - दूरी हट गई, दो ईमानदार, निर्लज्ज, असहाय न्यायालय, पाषाण प्रतिमाएँ, नाम रोग वायरस और फ्री मास्क आदि ऐसी ही लघुकथाएँ हैं।

'दो ईमानदार' लघुकथा ऑक्सीजन और रेमडेसिविर इंजैक्शन की कालाबाजारी के माध्यम से मर रही मानवीय संवेदनाओं को उजागर करती है। मलय अपने मालिक के कोरोना संक्रमित पुत्र के लिए ऑक्सीजन और रेमडेसिविर के लिए भटकता रहता है।